हिम्मते मर्दा मददे खुदा

थका हारा नूरी चुपचाप आकर कीचन मे एक कुर्सी खींच कर बैठ जाता था।कालिखों से सने हॉथ, फटी कमीज और पैंट, ऊपर से फटे कैनवस के जूते और दॉये कन्धे से लटकता एक फटा सा रूक्जाक।नजरें झुकाए वो खाना खाने बैठ जाता था।न उसके पास कोई बर्त्तन होता था और न ही कोई ग्लास या प्लेट।वो अपने खाने बाहर से ही लाता था।

हमारे हॉस्टल मे आए उसे ज्यादे दिन नही हुए थे।मेरा भी उससे कोई खास परिचय नही था, पर मैने सुन रखा था कि वो जिस कमरे मे रह रहा है ,वो एक जर्मन स्टूडेन्ट के नाम से अलॉट है।नूरी उसमे इलिगल रहता है।

जब मेरा उससे परिचय हुआ तो पता चला कि वो इराक का रहने वाला है और बर्लिन मे उसके असाईलम का केस चल रहा है।उसके पास कोई वर्क परमिट भी नही थी।वो लोगों के गाड़ियों की छोटी मोटी मरम्मतें करके अपने खर्चे निकाला करता था।यही उसके आमदनी का जरिया था।वो मुझे अरबी तो कहीं से नही दिखता था।न तो उसमे अरवियों वाली उज्जडता थी और न ही उनकी स्वच्छन्दता।वो बड़े ही शान्त स्वभाव और शिष्ट व्यवहार का था।अपना हॉथ बढाने से पहले एक बार वो उसे अपनी कमीज से जरूर ही पोंछ लेता था और हॉथ मिलाने के बाद कुछ पलों तक उसे अपने सीने पर रखे रहता था।हर अभिवादन उसके लिए बड़ा ही हार्दिक होता था।

जर्मनी मे आए उसे डेढ वर्ष हो चले थे।अक्सर वो बैठा अपने ग्रूनेवाल्डस्ट्रासे के हाईम की कहानियॉ सुनाया करता था, जहॉ एक बड़े से हॉल मे उसे दूसरे देशों के अजूलान्टों के साथ ठहराया गया था।वहॉ की गूटवन्दियॉ, चोरियॉ, छोटी छोटी वातों पर मार पीट, इसका उसके बिस्तर मे घूस कर छेड़ छाड़, सामानों की छीना झपटी और न जाने क्या क्या।वो गई रात घूम घूम कर रेस्त्राओं और वारों मे गुलाब के फूल बेचा करता था।ये पैसे भी उससे छीन लिए जाते थे।

बगदाद मे उसके पिता के पास एक छोटी सी दुकान थी, जहॉ वो गाड़ियों के इस्तेमाल किए गए पार्टस बेचा करते थे।उन्हे गाड़ियों के मरम्मत का काम भी आता था।उनकी कमाई से परिवार का गुजारा किसी तरह चल रहा था।अपने ग्यारह भाई बहनो मे नूरी ही सबसे बड़ा था।इस्ट बर्लिन के जरिये वो वेस्ट मे आया था।

उन दिनो मुझे बर्लिन मे यहॉ के एक सरकारी दफ्तर मे छ सप्ताह का काम मिला हुआ था।यूनिवर्सिटी मे छुट्टियॉ चल रही थी।जब मै काम से वापस आता था, तो अक्सर नूरी से मेरी मुलाकात बाहर ही हो जाती थी।या तो वो किसी कार के नीचे लेटा मिलता था, या कोई स्कूटर ठीक करता होता था।पता नही उसे इन कामों के कितने पैसे मिलते थे!

अब मेरा खाली समय उसी के संग गुजरने लगा।शाम का खाना भी हम साथ बनाने और खाने लगे।फिर वो मेरे कमरे मे बैठा अपने भाई बहनो और अपने परिवार के दूसरी किल्लतों के बारे मे बताया करता था।विना सीखे वो टूटी फूटी जर्मन भी बोल लेता था।

उसके एसाईलम का केस एक बार रद्द किया जा चुका था।दूसरी बार उसका केस कब खोला जाएगा, ये उसे पता न था।एक बार मैने उससे पूछा भीःअगर तुम ये केस हार गए, तब क्या करोगे!

ःतब भी यहीं रहूँगा।

ःपर कैसे!तुम्हे ये जर्बदस्ती डिपोट कर देंगे।

ःनूरी के संग किसी तरह की जर्बदस्ती नही की जा सकती है।

इस एक पसली के नूरी की ऑखों मे शोले ही शोले घहरा चले थे।

मुझे अपने छ सप्ताह के काम के अट्ठाईस सौ जर्मन मार्क्स मिले थे।इन पैसों से मुझे अपना कम से कम एक सिमेस्टर बिना कोई काम किये निकालना था, पर नूरी के कपड़ों लत्तों को देख कर मुझे उस पर बड़ी दया आती थी।मुझे ये पता था कि कहने पर वो मेरे संग कभीं खरीददारियों के लिए नही जायेगा।धीरे धीरे बर्लिन की ठंढ भी बढती जा रही थी।मेरा मन नही माना।बिना उसे बताये मै उसके लिए कुछ कमीजें, पैंटे, ग्लब्स ,जूते, मोजे, जैकेट, रूक्जाक, जोगिन्ग सूट स्वैटर्स और न जाने क्या क्या खरीद लाया।बर्लिन की दुकानो मे समर सेल्स चल रहे थे।डेढ सौ मार्क मे ये सारे सामान आ गये थे।शाम को खाने के बाद जब वो मेरे कमरे मे आया, तब मेरे बिस्तरों पर पड़े तमाम प्लास्टिक थैलों को देख कर पूछाःआज खरीददारियों के लिए गये थे क्या!

ःहॉ!पर अपने लिए नही।तुम्हारे लिए।

ःमेरे लिए।एक पल मे उसकी ऑखें छलछलाने को आई।उससे कुछ बोला न गया।चुपचाप उठा और अपने ऑसू पोंछने अपने कमरे मे चला गया।थोड़ी देर के बाद वो फिर मेरे कमरे मे आयाःये पैसे तुम्हे मुझ पर न खरचने थे।तुम्हे भी तो अपनी पढाई लिखाई के खर्चे खुद ही उठाने होते हैं।

ःये तो सही है, पर मेरे पास वर्क परमिट है।जरूरत पड़ने पर मै काम कर सकता हूँ फिर दूसरे लोगों की तरह मेरे पास हजारों शौक भी नही है।कमरे का किराया और दो वक्त का खाना।ये तुम भी जानते हो।

ःकिस हक से मै तुम्हारे तोहफों को पकडूँ!

ःएक दोस्त और भाई के हक से।मै तुम्हारी खुद्दारियों को जानता हूँ फिर भी मै चाहता हूँ कि तुम इन सामानों को ले लो।आज तुम्हारे हालात अच्छे नही है, कल को अच्छे हो जायेंगे।अपनी तंगियों मे मै तुम्हे याद कर लिया करूँगा।

ःइंसाअल्लाह, कहके वो उठा और फिर एक एक सामानों को खोल खोल कर देखने लगा।

शाम का खाना मै खुद ही बनाता था।नूरी को खाना बनाना नही आता था, पर कीचन मे वो मेरी हर तरह की मदद कर दिया करता था।एक और बातः गन्दे बर्त्तन वो मुझे छूने तक न देता था।

एक दिन शाम को मुझे ऐसा लगा कि वो कुछ जरूरत से ज्यादे ही चुप है।वो खाना भी बड़े अनमने ढंग से खा रहा था।पूछने पर कहने लगाःकल मुझसे मेरी छत भी वापस ले ली जायेगी।

मै चौंका।पर क्यो!

ःमै जिस कमरे मे रहा हूँ वो गेहार्ड का है।कल वो आस्ट्रेलिया से वापस आ रहा है।

ःफिर!

ःमुझे ग्रूनेवाल्ड वापस लौटना पड़ जाएगा।

मै सोच मे पड़ गयाःतुम क्या सोचते हो!कब तक तुम्हारे केस का फैसला होगा!

ःपता नही

ःतुम्हारा रजिस्ट्रेशन कहॉ पर है!

ःग्रूनेवाल्ड पर

ःतुम मेरे साथ रहना चाहोगे!

ःमै तुम पर बोझ बनना नही चाहता।

ःतुम मुझ पर बोझ नही बनोगे।तुम जाकर अपने कपड़े लत्ते लाओ।मै हाऊस माईस्टर से एक गद्दा और एक डुपलिकेट चाबी पैदा करके लाता हूॅ कहके मैने उसे अपने कमरे की चाबी पकड़ाई।

नूरी अब मेरे साथ ही रहने लगा।शाम को ही हमारी मुलाकातें होती थी।मै दिन भर यूनिवर्सिटी मे रहता था और नूरी स्टूडेन्टो के फटीचर गाड़ियों के नीचे।छोटा मोटा काम उसे रोज ही मिल जाता था।अपने काम का उसे जो भी पैसा मिल जाता था.वो पकड़ लेता था।कभीं दस मार्क तो कभीं बीस मार्क।खाने पीने की खरीददारियॉ वही करता था।यहॉ तक कि इन्डियन मसाले और सब्जियॉ भी वही खरीदने जाता था।मुझे बस उसे एक लिस्ट बना कर देना पड़ता था।पैसे वो कभीं पकड़ता ही न था।जब मै शाम को वापस आता था.तब वो मेरे कमरे मे नहा धोकर बैठा टेलीविजन देखता मिलता था।पता नही कब पहली बार हम एक दूसरे से गले लग कर मिले थे!हमारी उम्र तो समान ही थी.पर उसकी ऑखों मे मेरे लिए आदर ही आदर था।वो अक्सर मुझसे बड़े आत्मविश्वास के साथ कहता थाःमेरे रास्तों पर अब तक मेरे भाग्य ने सिर्फ रोड़े ही बिछायें है।एक दिन मै इन्ही रोड़ों से एक महल बनाऊॅगा प्र्मोद।उसका ये कहा मुझे अर्न्ततम तक अभिभूत कर जाता था।

अकस्मात उसके भाग्य ने उसके रास्ते पर एक बड़ा ही रोड़ा बिछा दिया।उसे अपने वकील से एक चिट्ठी मिली।नूरी का केस दुबारा रद्द कर दिया गया था।दो तीन दिनो के अन्दर ही उसे पुलीसवालों की भी नोटीस मिली।पन्द्रह दिनों के अन्दर उसे डिपोट किया जाना था।

अब अन्डरग्राउन्ड होने के अलावे उसके पास दूसरा कोई रास्ता ही न था।मेरे पास कुल जमा पुंजी के तीन सौ मार्क थे.जिसे जर्बदस्ती मैने उसे पकड़ाया।अपना सूटकेस खाली किया और उसमे नूरी के कपड़े रखे।अपना एक कम्बल भी उसमे रखा और नूरी को पकड़ाते हुए कहाःतुम मुझे बहुत याद आओगे नूरी।अपना ख्याल रखना।

जाने से पहले वो मुझसे कहाःसब कुछ ठीक होते ही मै तुमसे मिलने आऊॅगा।उसके पहले नही।मै नही चाहता कि मेरी वजह से तुम किसी मुसीबत मे पड़ो।मै तुम्हारे एहसानो को जीवन भर नही भूलॅगा।

नूरी बर्लिन मे एक तरह से लापता हो गया।

एक बहुत ही अच्छा दोस्त मुझसे विलग हो गया।आये दिन शाम को मुझे उसकी याद आती थी।पता नही इस ठंढ मे वो कहॉ कहॉ भटक रहा होगा!

इस तरह के अध्याय बर्लिन मे आए दिन खुलते और बन्द होते है।नूरी के भाग्य मे क्या बदा था! ये उसके भाग्य को ही निर्धारित करना था।न जाने वो कहॉ होगा और क्या कर रहा होगा!ये सवाल अहर्निश मुझे व्यस्त रखता था।

अचानक दो वर्षो के बाद नूरी एक दिन मुझे रिचर्ड वागनर प्लात्स नाम के एक मेट्रो की सीढियों पर मिला।उसके हॉथों मे टात्स नामके अखबारों का एक पुलिन्दा था.जिन्हे वो बॉटने निकला था।मुझसे गले लग कर एक अखबार मुझे मुफ्त मे पकड़ाया।हालचाल के नाम पर कहने लगाःकुछ खास नही है।पुलिसवालों से मेरी ऑख मिचौनी चल रही है।आज यहॉ सोना तो कल वहॉ।आज इसके नाम से अखबार बॉटना.तो कल उसके नाम से।जब तब इटेलियन रेस्त्रओं मे भी इलिगल बर्त्तन मॉजने का काम मिल जाता है।बिछने दो इन रोड़ों को।अपने महल के लिए ये थोड़े कम पड़ रहे हैं।

वो मुझे कहीं से भी रत्ती भर भी घबराया न दिखा।

दूसरी बार वो मुझे स्यूड स्टैर्न नाम के एक मेट्रो के बाहर एक रेलिन्ग पर बैठा दिखा।मै उससे मिलने के लिए बढा ही था कि अचानक नही भी तो पुलिस की दसों गाड़ियॉ स्यूड स्टैर्न को आ घेरीं।सैकड़ों पुलिसवाले भर्रा कर अपनी गाड़ियों से निकले।वहॉ एक भगदड़ सी मच गई।देखते ही देखते वहॉ सैकड़ों गिरफ्तारियॉ हुई नूरी मुझे एक तीर की तरह कार्लमार्क्सस्ट्रासे पर भागता दिखा।नूरी अब हशीस वगैरह बेचने लगा था।

ये मेरे लिए किसी सदमे से कम न था फिर भी मेरा मन कहता था कि बड़ी मजबूरी मे ही वो इस तरह के पेशे मे आया होगा।जो लड़का बीयर की तरफ भी अपनी ऑखे उठा कर नही देखता था.वही अब स्यूड स्टैंन पर हशीस बेचता है।

इसके बाद दस वर्षो तक नूरी मुझे बर्लिन मे कहीं भी न दिखा.पर मै उसे भूला नही था।जब तब मुझे उसकी याद आ ही जाती थी।मै अपनी पढाई खत्म करके एक सिविल सर्विस मे आ चुका था।इस दरम्यान मे मै तीन बार अपना मकान भी बदल चुका था।सिगमून्डसहोफ छोड़ने के बाद मै फ्राउएनहोफरस्ट्रासे पर आया।उसके बाद मैर्किसेस फियरटेल पर रहा.फिर उन्टर डेन आईखेन पर आया।मेरे पास अब कोई वेगमय जीवन नही था।एक ढर्रे की जिन्दगी थी.जिससे मै संतुष्ट था।

एक दिन शाम को मै अपने एक कलिग के साथ फोरम स्टेगलित्स नाम के मार्केट कॉम्पलेक्स के पहली मंजिल पर बैठा बीयर पी रहा था।दॉई तरफ चलने वाले दो कन्वेयर्स कस्टमर्स से खचाखच भरे पड़े थे।एक कन्वेयर उन्हे ऊपर की मंजिलों पर ला रहा था और दूसरा उन्हे नीचे की मंजिलों की तरफ।पब के सामने नकली बड़े बड़े फाईकस पेंड़ो के नीचे आठ दस मेजें लगी हुई थी।पास ही इसी पब के खाने पीने के दो स्टैंडें भी थे.जिन्हे घेरे ऊॅची ऊॅची स्टूलें लगी हुई थीं।वहॉ भी कुछ लोग बैठे बीयर पी रहे थे।

अचानक कन्वेयर से दो जन पब के अन्दर आए और आ कर एक कोने की मेज ले कर बैठ गए।एक अजीब सा सन्नाटा चारो तरफ छा गया था।पब मे जितनी भी लड़कियॉ काम कर रही थी.उनकी तरफ लपकीं।पलक झपकते उन दोनो के सामने मिल्कशेक के बड़े बड़े ग्लास आ गऐ।मेरे सामने जो भीमकाय अपनी पीठ किए बैठा था.कोई बॉडी बिल्डर ही लग रहा था।उसकी आड़ मे जो दूसरा बैठा था.वो नजर ही न आ रहा था।मै उन्ही की तरफ देखे जा रहा था।आधे घन्टे के अन्दर नही भी तो दसों लोग इनकी मेज पर आए और खड़े खड़े पता नही कौन सी बातें उनसे करते रहे।जब थोड़ी देर के लिए वो भीमकाय अपनी कुर्सी छोड़ कर हटा.तब दूसरे पर मेरी नजर पड़ी।वो अपने दोस्त की तुलना मे एक पसली का भी न था।हमारे बीच यही कोई पन्द्रह बीस मीटर का फासला रहा होगा।सफेद रंग की कमीज.लाल रंग की वेस्ट.गले मे सोने की

एक मोटी सी जंजीर.पीछे की तरफ किए बाल।मेज पर ठीक उसके सामने एक काले चमड़े का रूक्जाक रखा था.जिसकी बजह से मुझे उसका पूरा चेहरा न दिख रहा था।

बार बार मुझे उसके नूरी होने का शक़ हो रहा था.पर मै पूरी तरह आश्वस्त नही था।थोड़ी देर मे ही उसका भीमकाय दोस्त वापस लौटा।दोनो अपने मिल्कशेक की ग्लासें खाली कर के उठे और चलने को हुए।तभी उस एक पसली वाले की मुझ पर नज़र पड़ी।जब वो अपना दॉया हॉथ अपने सिल्क के वेस्ट से पोंछता हमारी मेज की ओर बढा.मेरा बचा खुचा संशय जाता रहा।वो वाकई मे नूरी ही था।

हॉथ मिलाने के बाद वो मेरे गले से जा लिपटा।फिर अपना हॉथ मिनटो तक अपने सीने पर रखे रहा।

अपने दोस्त जमाल के कानो मे कुछ फूसफूसा कर वो हमारी मेज पर आ बैठा।पलक झपकते अब पब की सारी लड़कियॉ हमारे मेज को घेरे खड़ी थी।ये वो ही थीं.जो मिनटों इशारों के बावजूद हमारी मेज की तरफ अपने रूख ही न करती थी।

मेरे कलिग की वजह से नूरी ज्यादेतर चुप ही रहा।सिर्फ हालचाल तक ही हमारी बातें सीमित रही।नूरी के सेहत मे कोई खास परिवर्त्तन तो नही आया था.पर वो अब कुछ ज्यादे ही चुप रहने लगा था।जब मै उससे कुछ पूछता था.तब वो अपनी एक हॅथेली अपने कान पर रख लेता था।अक्सर वो अपने सर के बाल अपनी उॅगलियों से पीछे की ओर करता रहता था।उसके पास एक उकाबों जैसी नजरे थीं।उसके ऑखों की पुतलियॉ हर आने जाने वालों पर जमी रहती थीं।अपना दॉया हॉथ वो अपने पतलून की दाहिनी जेब मे ही घूसेड़े रखे रहा।हमसे बीयर के पैसे तक न लिये गए।एक वी आई पी की तरह हमे पब की लड़कियों ने विदा किया।मेरे कलिग को तो जैसे सॉप ही सूॅघ गया था।

नूरी के रूतबे ने मुझे कुछ खास नही चौंकाया।जो आत्मविश्वास और हिम्मत उसके पास थी.मुझसे छुपी न थी।वो शुरू से ही बेहद कम बोलता था.पर जब वो अपनी नजरें ऊपर उठाता था तो वहॉ मुझे सिर्फ दो चीजें दिखती थीः या तो उसके सपने या फिर एक आग।

मै उसके पुलिस से पकड़े जाने और उसके डिपोट होने के बारे मे कम ही सोचता था।मुझे अक्सर ऐसा लगता था कि जहॉ उससे एकाध सही या गलत लोग टकराये नही कि वो किसी छोटे मोटे ग्रूप का सरदार बन बैठेगा।

मेरा सोचा गलत नही था।

एक नीले रंग के बे एम बे काब्रिओ से वो मुझे घर छोड़ने आया।उन्टर डेन आईखेन पर एक पेंड़ की आड़ मे वो अपनी गाड़ी पार्क किया.गाड़ी की सारी लाईटें बुझाई और कहने लगाःतुम्हारे संग तुम्हारा दोस्त था।इस वजह से मै अपने बारे मे तुम्हे कुछ ज्यादे नही बता पाया।इतने सालों के बाद मिले हो।एक जश्न तो आज हो ही जाना चाहिये।

ःहॉ क्यों नहीं!आओ घर चलते हैं।आराम से बैठेंगे।साथ मे कुछ खाना बनायेंगे।

ःघर पर फिर कभीं।आओ हेलो मे चलते हैं।

ःजाने दो इस हेलो को नूरी।वो तो बस नाम का पब है।वहॉ पता नही कौन कौन सा धन्धा होता है!

ःतुम्हे इन धन्धों से क्या लेना देना है!आराम से बैठ कर एकाध बीयर पीना।फिर साथ मे खाना खायेंगे और आराम से बातें करेंगे।फिर मै तुम्हे घर छोड़ दूॅगा।

ःफिर हेलो क्यों!उन्टर डेन आईखेन पर भी तो तमाम रेस्ॲा हैं।

ःतो फिर मै तुम्हे बता ही देता हूॅ।मै ही हेलो का मालिक हूॅ।शाम को वहॉ मेरा रहना बहुत जरूरी हो जाता है।

नूरी उल्टे सीधे धन्धों मे जा लगा है.ये तो मै फोरूम मे ही जान गया था.पर वो मेरा दोस्त था।उसके धन्धों की वजह से मै उसे नकार नही सकता था।मै उसके साथ हेलो चलने को इस बजह से भी तैयार हो गया कि मै ये जानना चाहता था ःपिछले पन्द्रह वर्षो ने उसे क्या दिया और उससे क्या कुछ छीना।

वीलान्डस्ट्रासे पर हैलो के सामने उसकी गाड़ी रूकी भी न थी कि एक जमाल की तरह का अरबी पास आके खड़ा हो गया।नूरी ने उसे अपने गाड़ी की चाबी पकड़ाईमैने सबसे पहली नज़र हेलो के साईन बोर्ड पर डाली।हेलो तो मुझे कहीं पढने को न मिला.पर एक गुलाबी लाईटेड साईनबोर्ड पर मुझे गहरे लाल बड़े बड़े दो होंठ जरूर दिखे।

नूरी मेरा हॅाथ थामे हेलो मे घूसा।रोटेटिंग मेन डोर के भारी भरकम पर्दो को हटाये फिर मुझे दो लम्बे तगड़े अरबी दिखे।हम एक बड़े से हॉल मे आये.जहॉ सैकड़ो मेजे लगी हुई थीं।पूरा हॉल कस्टमरों से भरा पड़ा था जिनकी सेवा मे बीसों लड़कियॉ लगी हुई थीं।तकरीबन इतनी ही लड़कियॉ बार पर भी थीं।मद्धम और रंगीन बत्तियों की वजह से मुझे इनके चेहरे तो साफ न दिख रहे थे.पर इनमे सारी जर्मन न थी।ये मै कईयों के गुटेन टाग से ही जान गया था।

नूरी मुझे सीधे अपने दफ्तर मे लिवा गया।इस तरह का शानदार दफ्तर मैने शायद फिल्मों मे ही देखा था।मुझे एक गद्देदार सोफे की तरफ इशारा करके नूरी ने मुझे बैठने को कहा और खुद अपना कोट एक गद्देदार कुर्सी के बॉहों पर टिका कर अपने मेज के नीचे झुका.शायद कोई बटन दबाने।एक रौलिन्ग चेयर खिसकाता वो मेरे पास आया ही था कि एक यही कोई अठ्ठारह उन्नीस साल की लड़की दफ्तर के शर्माती सकुचाती अन्दर आई।उसका परिचय नूरी ने ही दियाःनताशा!उक्राईना की रहने वाली ह्टैहै।तुम इसे रसियन मे ही बताओ कि तुम्हे क्या पीना है।

जब वो अपने दोनो हॉथ जोड़े मुझसे पूछीःस्तो वी खाचिचे!मुझे ऐसा लगा कि मेरे कानों मे किसी ने शहद उड़ेल दिया हो।

ःअदनो पीवो।

ःकाकोये!

ःएता नी वाजना।

ःखराशो।कहके वो दफ्तर से बाहर निकली ही थी कि मैने नूरी के ऑखों मे अपनी नजरें गाड़ींःअपने अॅगूठे को अपनी तर्जनी से रगड़ते हुए मैने नूरी से पूछाःस्कोल्का!

ःथोड़ी मॅहगी है।तुम्हे इसके संग सोना है!

ःमुझे किसी के साथ नही सोना है.पर ये भी धंधा करती है!

ःहॉ!ये सारी लड़कियॉ.पर इस हेलो मे अठ्ठारह साल से नीचे की एक भी लड़की यहॉ नही है।ड्रग्स और सेक्स को मै अपने रिजिम मे कम से कम बर्लिन मे अठ्ठारह साल के नीचे नही सरकने दूॅगा।

ःकितनी लड़कियॉ यहॉ काम करती है!

ঃपैंतीस!
ঃये कहॉ की है!
ঃज्यादेतर रसिया और उक्राईना की।कुछ पोलेन्ड और चेख की भी हैं।कुछ जर्मन हैं.कुछ थाईलैंड और वियेतनाम की भीं हैं।
ঃइनकी शर्त्ते क्या हैं!
तभी नताशा एक सुन्दर से ट्रे मे दो चमचमाती ग्लास और दो बोतलें ले कर अन्दर आई।एक बीयर की और दूसरी कोले की।मेर सामने पड़ी मेज को अपने एप्रन से पोंछ कर उस पर ट्रे रखा और बड़ी अदा से दोनो बोतलें खोल कर दोनो ग्लासों को तीन तिहाई भर दिया।जब वो जाने को हुई तो नूरी नताशा से कहा कि जरा अब्दुल को बता देना कि आज शाम के खाने पर मेरा एक खास मेहमान आया हुआ है।नताशा चली गई।उसे देख कर तो मुझे कहीं से न लगा कि वो भी इस तरह का धन्धा करती होगी।
मैने दुबारा अपना सवाल दुहरायाः
ঃइनकी शर्त्ते क्या हैं!
ঃइनकी कौन सी शर्त्ते होंगी!यहॉ की शर्त्ते मै तय करता हूँ।
ঃहटाओ इस पब को।इन पन्द्रह सालों मे क्या क्या किया तुमने!
ঃक्या क्या नही किया मैने!अखबार बॉटे.बर्त्तन धोये.हशीस बेचा.चोरियॉ की.दलालियॉ की.मारपीट की.कमीशनो पर कपड़े बेचे.वीसा के लिए डेनमार्क मे जाकर एक जर्मन लड़की से कागजों पर शादी की.उसे तलाक दिया।कुछ ही सालों मे मेरे पास बेरोजगार दोस्तों की कमी न थी।इस हेलो का मालिक एक तुर्क था.पर उससे ये पब न चल पाया।इसे मैने लीज़ पर ले लिया।दस हजार मार्क मै हर महीने सिर्फ इसके किराये का देता हूँ।ऊपर के खर्चे अलग से।
अपने दोस्तों की आड़ मे मै इस पब को चला ले गया।शुरू मे मुझे कई मफिया ग्रूपों ने परेशान करना चाहा.पर मेरे साथी मेरे एक इशारे पर मरने और मारने को तैयार बैठे रहते थे।इन्हे मै अपने भाईयों की तरह समझता हूँ।
इस पब मे शराब चौगुनी कीमत पर बेची जाती है।यहॉ जो लड़कियॉ काम करती है.इन्हे मै इनके काम के दस मार्क हर घंटे का देता हूँ।इनकी कीमतें एक घन्टे के लिए डेढ सौ मार्क से पॉच सौ मार्क तक है।इन्हे मुझे अपनी कीमतों का सत्तर प्रतिशत देना होता है।
इस पब के ऊपर मेरे पास पन्द्रह फर्निश्ड कैबिने हैं।ये वहीं अपने मेहमानो को लिवा जाती हैं।इनकी पोर्नो फिल्मे भी बनती है.पर मेहमानों के संग नही।प्रोफेशनल जिगूलीस आते हैं।इस पूरी रात का इन लड़कियों को पॉच हजार मार्क मिलता है।इतना ही ये जिगूलिस भी लेते हैं।
इसके अलावे मै बर्लिन मे दूसरे देशों से आने वाले हर प्रोमिनेन्ट म्यूजिशियन्स.एक्टर्स.एक्ट्रेसेस.स्पोर्टसमेन.बिजनेशमेन को अपने ग्रूप का प्रोटक्शन देकर उनसे पैसे तसीलता हूँ।बर्लिन के स्टेगलित्स और लिख्टरफेल्डे की कई दुकानों और रेस्त्राओ को भी हम अपना प्रोटेक्शन देते है।
ঃएक और बात बताओ नूरी!तुम एक महल बनाने की भी बात करते थे।वो बन गया!
ঃवो कभीं भी नही बन पाएगा।इस जीवन मे तो कतई ही नही।बस मुझे सिर्फ एक बात का हौसला है।मै अपने जीते जी एल हालावी परिवार के लिए इतना कुछ छोड़ जाऊँगा कि कई पुश्तों तक बिना कोई काम किये वो ऐश से जियेंगे।
ঃशादी नही करनी है!
ঃनही।
ঃक्यों!
ঃकिसी भी तरफ से.कभी भी.किसी का भी शोला मेरे जिगर को छू सकता है।मेरी बस एक आरजू है कि उस नेक बन्दे का शोला मेरे जिगर को छुए।मेरी पीठ को नही।
रात के दस बज चले थे।मुझसे एक घूँट से ज्यादे बीयर नही पीया गया और न नूरी से ही अपना कोला।
ঃअब तुम अपने बारे मे भी कुछ तो बताओ।
ঃतुम्हारे जितना बताने को मेरे पास नही है।उन्टर डेन आईख्रन पर रहता हूँ।क्लिनिकूम मे काम करता हूँ।हार्त्स की एक लड़की से शादीसुदा और दो बेटियों का बाप हूँ।तुम्हारी तरह मेरे पास पैसे तो नही है.पर मै खुश हूँ।
ঃये तो तुम्हारे ऑखों मे आई रौनकें ही मुझसे कह रही हैं।एक महल तो तुम जैसे लोग बना पाते है.नूरी जैसे नही।आओ घर चलते हैं।कुछ खाना खाते हैं.फिर मै तुम्हे घर छोड़ आऊँगा।घर पर फोन नही करना है!तुम्हारी बीबी और तुम्हारी बेटियॉ तुम्हारे इन्तजार मे बैठी होंगी।
ঃऐसा है नूरी कि जब मै समय से घर नही पहुँचता.तब इन तीनो को ये पता होता है कि मै किसी अच्छे दोस्त के संग बैठा हूँ और एक अच्छा दोस्त ही मुझे इतनी देर तक उनसे दूर रख सकता है।
जब मै बार मे दुबारा वापस आया.तो एक सरसरी नज़र वहॉ काम करने वाली लड़कियों पर डाली।नताशा मुझे कहीं न दिखी।
नूरी का अपार्टमेन्ट हेलो से सिर्फ पॉच मिनट दूर था.फिर भी दस अरबी हमारे साथ लग गये।एक पल मुझे ऐसा लगा कि मेरे जैसा एक समान्य आदमी इस दुनिया की कोई जानी मानी हस्ती हो।हमे घर तक छोड़ कर आठ वापस लौट गये.पर दो हमारे साथ नूरी के अपार्टमेन्ट मे आये।इनमे से एक जमाल था।नूरी के चार कमरों का अपार्टमेन्ट देख कर मै दंग रह गया।वहॉ उसके हर फर्निचर कत्थे की लकड़ी के थे और इजिप्ट से मॅगवाये गये थे।हर कमरे की फर्श पर हॉथ की बूनी कार्पेटें बिछी हुई थी।खिड़कियों पर चायनिज सिल्क के पर्दे लहरा रहे थे।हर कमरे की छत से मैसिव पीतल के बड़े बड़े झाड़ फानूस लटक रहे थे।उसके दो कमरों मे दो बड़े बड़े ओवल टेबल लगे थे.जिनको घेरे नही भी तो बीसों नक्काशीदार कुर्सियॉ लगी हुई थीं।इन चार कमरों के अलावे उसके पास एक और छोटा सा कमरा था.जिसमे उसकी नौकरानी सोती थी।उसका नाम बिलयाना था।वो जिप्सी थी और यूगोस्लावियन थी।घर की साफ सफाई वही करती थी।मुझे तो वो कहीं से भी नौकरानी नही लगी।कम उम्र.अच्छी खासी कद.तीखे नैन नक्श.कमर तक बढे सुनहरे बाल.भड़कीले कपड़े.सर पर सफेद मोतियों का ताज।पता नही वो वाकई नूरी की नौकरानी थी या कुछ और!वो जर्मन भी अच्छा खासा बोल लेती थी।नूरी का रसोईया अब्दुल करॉची का रहने वाला था।वो अपना परिचय उर्दू मे ही दिया।वो नूरी के साथ नही रहता था.पर दोपहर के बारह बजे से गई रात तक वो नूरी के घर पर ही रहता था।मेज बिलयाना ही सजा रही थी।ड्राईन्गरूम तक खाने की खूशबू आ रही थी।जब खाना लग चुका.तब बिलयाना ही हमे बुलाने आई।अपनी नज़रे झुकाये ही उसने नूरी को जर्मन मे उसका सर नेम लेकर कहाঃहेयर एल हालावी!एस इस्ट जो वाइट।

अब्दुल के बनाये खानो से मेज लगभग भर चला था। मटन की ही छ वैरायटीज़ थी। दसों तरह के रायते. अलग अलग फलों के मिल्कसेक और वो भी केवड़े और गुलाब जल के साथ. तीन तरह के पुलाव. घी मे नहाये नान। बड़ा जादूई हॉथ अब्दुल के पास था।
नूरी के इशारे पर बिलयाना अपने कमरे मे चली गई। खाने के दौरान नूरी ही बताने लगा कि वो अब्दुल को अपने असायलम के दिनो मे मिला था। उन दिनो वो इलिगल बर्लिन के एक काफी अच्छे चलते इन्डियन रेस्ॉ मे खाने पकाता था। समय के साथ उसके मालिक ने उसका वीजा तो ठीक करवा दिया. पर उसकी पगार वैसे ही रखा। जब मेरी हालत जरा सुधरी. तो मैने उसे तीन गुना ज्यादे पगार पर अपने यहॉ ले आया। सात साल से वो मेरे साथ है। उससे पहले जो बन्दा मेरे लिए खाना बनाता था. वो इरानी था। खाना तो वो भी ढंग का बना लेता था. पर न जाने क्यों मै उस पर ऐतबार नही करता था। अपने बनाये खाने को पहले वो खाता था. फिर मै और मेरे दूसरे भाई।
मेरी तरह नूरी और उसके साथी भी हॉथ से ही खाये चले जा रहे थ। जब तब अब्दुल हॉथ जोड़े मेज तक बस मुझसे यही पूछने आता थाःभाई जान!खाना कैसा लग रहा है!
ःफर्स्ट क्लास अब्दुल। तुम मेरा विश्वास करो इस तरह का लजीज खाना मै अपने जीवन मे वाकई पहली बार खा रहा हूॅ। ये सुन कर वो विहवल और निहाल हो जाता था।
खाने के बाद मै नूरी के घर पर एक घन्टे और रहा। ऐसे ही हल्की फुल्की बातें हो रही थी। जमाल के संग उसका साथी भी हेलो वापस लौट चुका था। बिलयाना अब्दुल के संग मेज बढाने मे लगी थी।
मुझे रह रह कर ऐसा लग रहा था. जैसे नूरी को कोई बात परेशान कर रही है। रह रह कर वो अपनी उॅगलियों से अपने बाल पीछे करने लगता था। एकाध बार मैने उससे पूछा भीःक्या बात है नूरी!रह रह कर कहॉ खो जाते हो!तुम्हे अकेलापन चाहिये. तो मै चलता हूॅ।
ःनही दोस्त!कुछ देर और बैठ लो।
ःमै बैठने को तो बैठ जाता हूॅ. पर तुम इतने परेशान क्यों हो!कुछ तो कहो।
ःमुझे दो बातें परेशान कर रही हैं। पहलीःमै तुमसे लिए तुम्हारे तीन सौ मार्क इस जीवन मे वापस नही कर पाऊॅगा। इसे तुमने अपनी मेहनत से कमाया था और मुझे दिया था। कौन देता है आज के दिनो मे अपने मेहनत की कमाई. अपनी आखिरी पुंजी!मेरे पास मेहनत का कमाया एक मार्क भी नही है। जो था. मैने खर्च कर दिया है। एकबारगी मै भाषाविहीन था।
दूसरीःये हमारी आखिरी मुलाकात है। आज के बाद हम फिर कभीं नही मिलेंगे। मै नही चाहता कि मेरी वजह से तुम किसी मुसीबत मे पड़ो। मेरे पास दोस्त भी हैं दुश्मन भी हैं। हेलो लेने के बाद मै आज तक एक रात भी ढंग से न सो पाया। मै अपना दिल तो खोल कर तुम्हे दिखा नही सकता. पर तुम मेरे अजीज हो और मै नही चाहता कि इसे कोई जाने। तुम्हारे और तुम्हारे परिवार के नाम पर मुझे कोई भी कमजोर बना सकता है। मै किस्मतवर था कि तुम मुझे मिले। तुम्हारा अपना परिवार है। खुदा तुम्हारे दामन को बस खुशियों के फूलों से भर दे। अपनी बीबी और अपनी बेटियों को मेरा आदाब कहना। मेरे पास एक नम्बर है जिस पर सिर्फ मेरा खुदा ही मुझसे कानटेक्ट कर सकता है। मै चाहता हूॅ कि तुम उसे जुबानी याद कर लो। तुम्हे बर्लिन मे जब भी किसी मदद की जरूरत पड़े. मुझे इसी नम्बर पर याद करना।
ःमुझे तुम्हारे नम्बर नही चाहियें। अपनी मुसीबतों मे मै तुमसे नही. वरन तुम्हारे खुदा से बिना किसी नम्बर के कानटेक्ट कर लूॅगा।
मुझसे बिना विदा लिये नूरी उठा और बिलयाना को एक टैक्सी बुलवाने को कह कर अपने आप को अपने सोने वाले कमरे मे बन्द कर लिया।
टैक्सी तक मुझे बिलयाना ही छोड़ने आई।
कुछ महीनो के बाद मुझे एक बार नूरी फिर दुबारा फोरूम मे जमाल के साथ दिखा. पर वो रूका नही। मुझे देख कर भी वो एक अन्जान की तरह आगे बढ गया।
वापस घर आने के बाद मै नूरी की यादों मे खो गयाःवाकई जिस इन्सान मे हिम्मत होती है. वही मर्द होता है। जो मदद करता है. वो भगवान होता है। नूरी वाकई एक मर्द था और न जाने कितनों के लिए भगवान भी. पर इस एक पसली वाले नूरी का सबसे सबल पक्ष उसका याराना था। यही वजह थी कि उसे दोस्तों की कमी नही थी और उसके दोस्त उसके एक इशारे पर मरने और मारने को तैयार बैठे रहते थे। नूरी जैसे लोग मरते नही हैं। हर सम्पन्नता से इनका नाम जुड़ा होता है। सिर्फ इनके नाम बदलते रहते हैं. हर परिवार में हर समाज में हर देश मे हर भाषा मे. हर दशक मे और हर काल मेः...

प्रमोद कुमार सिंह